अध्याय 10

उपसंहार

"यहूदी मोर्दकै" की उपलब्धियों के बारे में बताते हुए एक लघु अध्याय के साथ एस्तेर की पुस्तक समाप्त होती है। पाठ्य, कुछ अन्तिम विवरण और स्पष्टीकरण देते हुए एक प्रकार के अन्त के रूप में कार्य करता है। यह कहानी के लिए एक "सदा के लिए आनन्द के साथ रहने" की समाप्ति - अथवा कम से कम "जब तक मोर्दकै शासन में रहा तक के लिए सुखद" समाप्ति - उपलब्ध करवाता है जिसमें यहूदियों ने घात किए जाने के खतरे का सामना किया था।

माइकल वी. फ़ॉक्स, जिसने पुस्तक को बारह "कार्यों" में बाँटा, इस अध्याय (प्रेरितों. 12) को एक "उपसंहार" के रूप में बताता है।[1] अडेल बर्लिन ने इस विचार के विरुद्ध तर्क दिया और कहा कि यह "प्रभावशाली घटनाक्रम से नीरस अन्त है अथवा स्थान से बाहर" है और इसे "कोडा" कहा। उसने इस प्रकार समझाया कि "मुख्य कहानी के समय से इसके घटनाक्रम के समाप्त होने के कुछ समय बाद, सम्भावित रूप से श्रोता के समय में, स्थिति में परिवर्तन करने के द्वारा" यह कहानी को पूरा करता है। अतः यह "एक प्रस्तावना के प्रतिरूप के समान कार्य करता है जो श्रोता को इसके समय से कहानी के समय की ओर खींचता है।"[2]

मोर्दकै की सफलता (10:1-3)

[1]राजा क्षयर्ष ने देश और समुद्र के टापू दोनों पर कर लगाया। [2]उसके माहात्म्य और पराक्रम के कामों, और मोर्दकै की उस बड़ाई का पूरा ब्योरा, जो राजा ने उसकी की थी, क्या वह मादै और फ़ारस के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखा है? [3]यहूदी मोर्दकै, क्षयर्ष राजा ही के नीचे था, और यहूदियों की दृष्टि में बड़ा था, और उसके सब भाई उससे प्रसन्न थे, क्योंकि वह अपने लोगों की भलाई की खोज में रहा करता था और अपने सब लोगों से शान्ति की बातें कहा करता था।

हालांकि इस अध्याय की तीन आयतें राजा की महानता के बारे में बताती हैं फिर भी उनका वास्तविक प्रभाव राजा ही के नीचे के रूप में मोर्दकै की सफलता पर है।

आयत 1. जैसे यह पुस्तक आरम्भ होती है वैसे ही **क्षयर्ष** और उसकी महानता के सन्दर्भ के साथ समाप्त होती है (1:1, 2 की तुलना 10:1, 2 के साथ करें)। जब

यह समाप्त होती है तब यह विशेष रूप में बताती है कि राजा ने **कर** एकत्रित किया। इसका इब्रानी शब्द מַס (*मास*) है जिसका सामान्यता अर्थ "बेगार"[3] है परन्तु यहाँ पर शायद यह "कर" की ओर संकेत देता है। यह कर **देश** और **समुद्र के टापू** तक विस्तृत किया गया। NRSV में "देश और समुद्र के टापू दोनों पर" है। "टापू" पूर्वी भूमध्यसागर के टापू होंगे जो फ़ारस के द्वारा नियन्त्रित थे। इसके पीछे का विचार सम्भावित रूप से, जैसा NIV अनुवाद करती है, "सम्पूर्ण साम्राज्य में, इसके दूर दूर के किनारों तक" है। यह कथन संकेत देता है कि उसने अपने राज्य में सब प्रान्तों पर कर लगाया।

इस बिन्दु पर कर का वर्णन क्यों किया गया? एक विचार यह है कि कर परमेश्वर के प्रबन्धन को प्रतिबिम्बित करता है: क्षयर्ष, यहूदियों को बचाने के लिए पुरस्कृत किया गया और हामान के द्वारा धन का जो वायदा उससे किया गया उसके नुकसान की भरपाई कर दी गई। अन्य व्याख्या यह है कि लेखक चाहता था कि पाठक इसे कर में राहत के विपरीत के रूप में देखें जो राजा ने अपने राजाओं को प्रदान की थी जब उसने एस्तेर से विवाह किया। 2:18 में बताई गई "छुट्टी" कार्य से विश्राम अथवा कर निर्धारण में राहत रही होगी (देखें RSV; NJPSV; ESV)।

अधिक उपयुक्तता के साथ, आयत 1 में वर्णित "कर" इसलिए है कि इसे प्रधान मंत्री के रूप में मोर्दकै की सेवा से जोड़ा जा सके जिसके बारे में अगली आयत में बताया गया है। ऐसा माना जा सकता है कि मोर्दकै की सिफ़ारिश पर राजा ने कर लागू किया हो और उसे एकत्रित किया हो जिसके परिणामस्वरूप उसे बड़ी समृद्धि प्राप्त हुई। यह ऐसा स्पष्ट करता है कि मोर्दकै ने प्रधान मंत्री के रूप में अपने लोगों की देखभाल करने के साथ साथ राजा की भी सेवा अच्छी प्रकार से की।[4] फ़ारस में मोर्दकै की भूमिका की तुलना मिस्र में यूसुफ की भूमिका से की जा सकती है। यूसुफ ने अपने लोगों की देखभाल अच्छी प्रकार से की; परन्तु फ़िरौन ही के नीचे रहते हुए उसने मिस्र के लोगों पर कर लागू करने के द्वारा राजा को लाभान्वित भी किया (उत्पत्ति 47:23-26)।

आयत 2. क्षयर्ष **के कामों** (מַעֲשֵׂה, *माᵃसेह*, "कार्यों") को **मादै और फ़ारस के राजाओं के इतिहास** में रिकॉर्ड किया गया। मादै का वर्णन पहले किया गया है क्योंकि मादै-फ़ारसी साम्राज्य के आरम्भ में यह प्रधान था जब ऊपरी तौर पर इतिहास का संग्रह करना आरम्भ किया गया। फिर भी, एस्तेर के अन्त में फ़ारस, इस आपसी साझेदारी में अधिक शक्तिशाली सदस्य था (1:3, 4 पर टिप्पणियाँ देखें)। अन्य प्रत्येक मामले में एस्तेर की पुस्तक के लेखक ने फ़ारस का नाम मादै से पहले रखा (1:3, 14, 19)।

क्या ये फ़ारसी साम्राज्य के "आधिकारिक" रिकॉर्ड थे या इन राजाओं का एक यहूदी विवरण हैं? एफ़. बी. ह्युई, जूनियर, का विचार यह था कि "क्षयर्ष के पराक्रम के कामों के साथ साथ मोर्दकै की महानता का एक पूर्ण विवरण मादै और फ़ारस के राजाओं के आधिकारिक वृत्तांतों की पुस्तक में रिकॉर्ड किया गया।"[5] इसके अन्तर में जोइस जी. बाल्डविन का यह विचार था कि यह सन्दर्भ "एक यहूदी

रिकॉर्ड की ओर संकेत करता था जहाँ तक आसानी से पहुँच बनाई जा सके।"[6] अधिक उपयुक्तता के साथ यह सन्दर्भ मादै-फ़ारसी दस्तावेज़ का संकेत देता है (देखें 2:23; 6:1)। यहाँ तक कि अगर पुरातत्वविद इन विशेष इतिहासों की खोज नहीं कर पाएँ तो कलाकृतियों की अनुपस्थिति कभी भी सिद्ध नहीं कर सकती कि उनका कोई अस्तित्व नहीं था।

इतिहास ने **मोर्दकै की उस बड़ाई का पूरा ब्योरा** देने के साथ राजा के **महात्म्य और पराक्रम** के बारे में बताया। अतः, बाद का एक पाठक, क्षयर्ष और उसके प्रधान मंत्री मोर्दकै के बल के विषय में आगे की सूचना की खोज करते हुए इन ऐतिहासिक रिकार्डों तक जा सकता है और लेखक के द्वारा सूचित तथ्यों को प्रमाणित कर सकता है। लेखक का कथन कि राजा "के कामों" को लिखा गया, संकेत देता है कि एस्तेर की पुस्तक तब तक नहीं लिखी गई जब तक क्षयर्ष के दिन पूरे नहीं हो गए।

आयत 3. अन्त में, लेखक, **यहूदी मोर्दकै** की उपलब्धियों के विषय में विवरण देने के द्वारा उसकी प्रशंसा करता है। फ़ारसी साम्राज्य में वह **क्षयर्ष राजा ही के नीचे था, ... यहूदियों की दृष्टि में** वह **बड़ा** और प्रसिद्ध था (**उसके सब भाई उससे प्रसन्न थे**)। NRSV इस प्रकार अनुवाद करती है, "वह यहूदियों के मध्य शक्तिशाली था और अपने सब भाइयों में प्रसिद्ध था"; NIV कहती है कि वह "यहूदियों के मध्य पूर्व प्रतिष्ठित था और अपने सब साथी यहूदियों में उच्च सम्मान पाता था।"

मोर्दकै ने सब स्थानों में यहूदियों की **भलाई** की खोज करते हुए और राज्य के शासन में अपने व्यवहार में उनका प्रतिनिधित्व करते हुए, उनकी ओर से कठिन परिश्रम किया। जिस समय NASB कहती है कि वह **अपने सब लोगों से शान्ति की बातें कहा करता था** तब KJV अधिक अक्षरशः अनुवाद देती है "अपनी सब पीढ़ी से शान्ति की बातें कहा करता था।" हालांकि "पीढ़ी" (זֶרַע, *ज़ीरा'*) का अर्थ "वंशज" (NRSV) है फिर भी अधिकतर अनुवादक इसका प्रयोग मोर्दकै की स्वयं की पीढ़ी की ओर संकेत करने के स्थान पर मोर्दकै के लोगों - अर्थात यहूदी जाति - की ओर संकेत करने के लिए करते हैं।[7] "शान्ति" अथवा "हित" (NASB) इब्रानी शब्द שָׁלוֹם (*शालोम*) से लिया गया है जिसका अर्थ है सब प्रकार की समृद्धि, स्वास्थ्य, सुरक्षा, "भौतिक भरपूरी और अच्छे सम्बन्ध।"[8] अपने लोगों के लिए *शालोम* के प्रयास में मोर्दकै ने साम्राज्य के *शालोम* में भी योगदान दिया।

यह पुस्तक, जो एस्तेर का परिचय देने से पहले मोर्दकै का वर्णन देती है (2:5-7), एस्तेर के अन्तिम वर्णन के बाद मोर्दकै की कहानी के बारे में अधिक बताते हुए समाप्त होती है। यह लगभग ऐसा लगता है जैसे लेखक यह बिन्दु बताना चाह रहा हो कि एस्तेर के कामों में एक मुख्य काम मोर्दकै के लिए यह सम्भव करना था कि वह प्रधान मंत्री बन जाए जिससे बदले में वह उस पद से यहूदियों को लाभ प्रदान कर सके। इस प्रकाश में देखते हुए, परमेश्वर के प्रबन्धन ने राज्याधिकार के प्रति एस्तेर को ऊँचा उठाते हुए न केवल यहूदियों को घात किए जाने से बचाया परन्तु इससे वे आगामी वर्षों में फ़ारसी शासन में इस प्रकार के एक उच्च पद में स्वयं का एक शासक पाने के द्वारा आशीषित भी हुए।

अनुप्रयोग

किसी अन्य की सहायता के द्वारा की गई सेवा महानता प्राप्त करती है (अध्याय 10)

मोर्दकै की महानता पर बल देते हुए एस्तेर की पुस्तक समाप्त होती है; इस प्रकार एस्तेर की कहानी, एक अर्थ में, मोर्दकै के साथ ही आरम्भ होती है और उसी के साथ समाप्त होती है (2:5; 10:3)। सम्भव है कि एक निन्दक कहे कि इसे किसी पुरुषवादी के द्वारा लिखा गया जो मात्र एस्तेर में इस स्तर तक रुचि रखता था कि एस्तेर ने मोर्दकै के ऊँचा उठाए जाने के प्रति योगदान दिया। इसके स्थान पर, पुस्तक महानता प्राप्त करने के लिए अन्य लोगों की सहायता करने का महत्व बताती है।

बाइबल की अन्य दो कहानियाँ इसी समान हैं। रूत की पुस्तक रूत के बारे में है; परन्तु यह उसकी सास, नाओमी के साथ आरम्भ होती है और उसी के साथ समाप्त होती है (रूत 1:1, 2; 4:14-17)। आखिरकार रूत ने नाओमी की सहायता की परन्तु वह नाओमी थी जिसे कहानी के अन्त में आदर दिया गया। जब बोअज़ के द्वार रूत ने एक पुत्र पाया तब नगर की स्त्रियों ने नाओमी को धन्य कहते हुए उत्सव मनाया। रूत विश्वासयोग्य और परिश्रमी थी परन्तु नाओमी ने ध्यान आकर्षित किया। इसी समान, यूसुफ की कहानी याकूब के बारे में बताए गए शब्दों के साथ आरम्भ होती है (उत्पत्ति 37:1, 2) और याकूब की मृत्यु और उसके गाड़े जाने के विवरण के साथ समाप्त होती है (उत्पत्ति 49:1-50:14)। पाठ्य का प्रबन्ध ऐसा दिखाई देता है जैसे यह इस बात पर बल दे रहा हो कि यूसुफ की सारी उपलब्धियाँ इसलिए तैयार की गईं कि उसके द्वारा उसके पिता के लक्ष्यों (अथवा याकूब के लिए परमेश्वर के लक्ष्यों) तक पहुँचने में सहायता दी जा सके न कि स्वयं महिमा पाने के लिए।

ये तीनों कहानियाँ उन लोगों के महत्व के प्रति गवाही देती हैं जो सहायक अथवा समर्थक हैं। वे सुझाती हैं कि जो लोग अन्य लोगों की सहायता करते हुए परमेश्वर की सेवा करते हैं वे महान बन जाते हैं और वे स्वयं महान हैं!

नए नियम के उदाहरण जो मन में आते हैं उनमें यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला शामिल है जिसने यह कहते हुए यीशु मसीह के लिए मार्ग तैयार किया, “अवश्य है कि वह बढ़े और मैं घटूँ” (यूहन्ना 3:30)। अन्द्रियास अपने भाई पतरस को मसीह के पास लाया (यूहन्ना 1:40, 41) जिससे मात्र यह देखे कि यीशु के चेलों में पतरस उससे अधिक प्रमुख व्यक्ति बन जाए।

हमें चाहिए कि हम उन लोगों की प्रशंसा करें जो अन्य लोगों की सहायता करते हैं और महानता प्राप्त करते हैं। उचित लक्ष्यों की पूर्ति में अन्य लोगों की सहायता करने में हमें प्राप्त प्रत्येक अवसर का प्रयोग करना चाहिए फिर चाहे उनके कामों की पूर्ति में हमारे लक्ष्यों की अनदेखी क्यों न हो। अन्य व्यक्ति को महान बनाने में जो सहायता हमने की उसे कोई और नोट करे या नहीं परन्तु जो कुछ

हमने किया है उसे परमेश्वर जानता है और वह हमें प्रतिफल देगा।

एस्तेर में परमेश्वर की खोज करना

इस पाठ में मैं आपको एक प्रकार के ख़ज़ाने की खोज में लेकर जाना चाहता हूँ। हम किसी चीज़ को - अथवा किसी को खोजते हुए जाएँगे। किसे? हम परमेश्वर की खोज करेंगे! विशेष रूप में, हम एस्तेर की पुस्तक में परमेश्वर की खोज करेंगे।

क्यों? इस पुस्तक में हमें परमेश्वर की खोज क्यों करनी चाहिए? निश्चित रूप से, बाइबल की किसी भी पुस्तक में परमेश्वर की खोज करना कठिन नहीं होना चाहिए - फिर भी बाइबल की इस पुस्तक में परमेश्वर का कोई सीधा सन्दर्भ सम्मिलित नहीं है!

जैसा हम बाइबल में यह पुस्तक पाते हैं इस कारण हमें सन्देह है कि निश्चित रुप से इसका परमेश्वर के साथ कोई न कोई सम्बन्ध अवश्य होगा। अतः अगर हम पाठ्य में परमेश्वर की खोज करते हैं तो यह हमारे लिए बहुत ही मूल्यवान होगा। ऐसा करने में हम देख पाएँगे कि हमारे जीवन में परमेश्वर उस समय कहाँ पर है जब ऐसा लगता है कि वह उस समय अनुपस्थित है।

भाग 1. एस्तेर की कहानी। एस्तेर की पुस्तक एक कहानी सुनाती है। (उस कहानी को एक बार फिर सुनाने के बाद हम देखेंगे कि कहानी में परमेश्वर कहाँ पर सटीक बैठता है।)

पृष्ठभूमि।

पुस्तक के प्रथम दो अध्यायों में एक यहूदी लड़की एस्तेर, सामर्थी फ़ारसी साम्राज्य की रानी बनी। ऐसा कैसे हो सकता है?

अध्याय 1. क्षयर्ष, जो कि “सरेक्सिस” भी कहलाता है, ने अपने विशाल शासन के हाकिमों को एक पर्व के लिए फ़ारसी साम्राज्य की राजधानी शूशन में आने का निमन्त्रण दिया। वह अपनी विशाल सम्पत्ति दिखाना चाहता था और अपनी प्रसिद्धि और सामर्थ्य प्रस्तुत करना चाहता था। यह पर्व अनेक महीनों तक चलता रहा। इसके बाद एक सप्ताह का एक अन्य पर्व मनाया गया; यह उन लोगों के लिए था जो शूशन राजगढ़ में रहते थे। वहाँ पर भोजन वस्तु और दाखमधु बहुतायत के साथ थे। निःसन्देह लोगों ने इस प्रकार के खाऊपन और मतवालेपन का आनन्द उठाया। सातवें दिन जब उत्सव अपने चरम पर था तब दाखमधु में मग्न क्षयर्ष ने अपने विशाल ख़जानों में से एक भाग दिखाने का निर्णय लिया: उसने अपनी रानी, वशती, को आदेश दिया कि वह आए और नशे में मग्न भीड़ के सम्मुख अपनी सुन्दरता दिखाए। वशती ने ऐसा करने से मना कर दिया और इससे राजा क्रोधित हो गया। परिणामस्वरूप उसने वशती को उसके पद से हटा दिया; अब वह रानी के रूप में आगे बनी नहीं रही!

अध्याय 2. बाद में अपने कर्मचारियों की सलाह पर क्षयर्ष ने आज्ञा दी कि एक सौन्दर्य प्रतियोगिता का आयोजन किया जाए जिससे देश में रूपवान कुमारियों में से साम्राज्य की सबसे सुन्दर जवान लड़की चुनी जाए जो उसकी रानी बने और वशती का स्थान ले सके। इस बिन्दु पर हमें एस्तेर का परिचय प्राप्त होता है। उसका

इब्रानी नाम "हदस्सा" था (जिसका अर्थ है "मेहन्दी")। वह एक अनाथ थी जिसे उसके चचेरे बड़े भाई मोर्दकै ने पाला-पोसा। उसे इस सौन्दर्य प्रतियोगिता में प्रविष्ट किया गया - यह उसकी स्वयं की इच्छा से था या इसके लिए उसे बाध्य किया गया इसके बारे में हमें जानकारी नहीं है। तब, आश्चर्यजनक रूप से राजा के हरम के प्रमुख की सहायता से उसने यह प्रतियोगिता जीत ली! वह एक अज्ञात यहूदी जवान लड़की से विशाल फ़ारसी साम्राज्य की रानी के रूप में राज्य करने के लिए आगे बढ़ी!

तब यह पुस्तक एक प्रकट निरर्थक विवरण को रिकॉर्ड करती है। जब मोर्दकै राजा के महल के बाहर बैठा हुआ था तब उसने दो पुरुषों को राजा की हत्या का षड्यन्त्र रचते हुए पाया। जब उसने इस योजना की जानकारी दी तो राजा का जीवन बचा लिया गया और षड्यन्त्रकारियों को फाँसी पर लटका दिया गया और मोर्दकै का वीरतापूर्ण कार्य राजा के इतिहास में रिकॉर्ड कर दिया गया। तब इस घटना के बारे में कुछ अधिक न कहते हुए कहानी जारी रहती है।

संघर्ष।

अध्याय 3. इस अध्याय में हमें उस संघर्ष के बारे में जानकारी प्राप्त होती है जो कहानी के शेष भाग के लिए प्रेरणा उपलब्ध करवाता है। हमें खलनायक हामान का परिचय प्राप्त होता है। वह राजा का पसन्दीदा दरबारी बन जाता है और उसे राजा का प्रधान मंत्री बना दिया जाता है। वह एक अहंकारी व्यक्ति था; और उसकी पदोन्नति के बाद वह घमण्ड से भर गया।

फिर भी, उसके साथ एक समस्या हुई: यहूदी मोर्दकै ने अन्य लोगों के समान उसके सामने झुकने अथवा उसे आदर देने से इनकार कर दिया। क्यों? किसी को जानकारी नहीं है। एक यहूदी के लिए किसी विदेशी राजा या कर्मचारी के सम्मुख झुकना निश्चित रूप से मूसा की व्यवस्था के विरुद्ध नहीं था। ऐसा हो सकता है कि हामान स्वयं को एक ईश्वर के रूप में प्रस्तुत करता हो और मोर्दकै का ऐसा मानना था कि उसके सामने झुकने का अर्थ, प्रभु को छोड़ किसी अन्य ईश्वर की उपासना के समान होगा। शायद मोर्दकै, हामान को पसन्द नहीं करता था! कारण चाहे जो भी हो परन्तु मोर्दकै ने हामान के सम्मुख झुकने से मना कर दिया।

मोर्दकै के अनादर ने हामान को अत्यन्त क्रोधित कर दिया। उसके घमण्ड को आघात लगा इसलिए उसने निर्णय लिया कि वह इसके विषय में कुछ करेगा। चूँकि मोर्दकै एक यहूदी था इसलिए हामान ने यह निश्चित किया कि वह सब यहूदियों का नाश करने के द्वारा उसे दण्डित करेगा! उसने यहूदियों के बारे में झूठ बोला और राजा को इस बात के लिए मना लिया कि वह अपनी शाही अँगूठी की छाप के साथ एक घोषणा प्रकाशित करने की उसे स्वीकृति दे दे। एक आज्ञा पारित की गई जिसमें यह घोषणा की गई कि एक निश्चित दिन सब यहूदियों का घात किया जाएगा। (चिट्ठी डालने के द्वारा वह दिन चुना गया जिसे *पुर* नाम से जाना जाता है।) हामान सन्तुष्ट हो गया; मोर्दकै के द्वारा उसकी महानता की पहचान करने से मना करने के लिए वह यहूदियों से बदला ले पाएगा!

क्या हामान के व्यवहार और कार्यों से बढ़कर मुर्खतापूर्ण कुछ और हो सकता

है? प्रधान मंत्री होते हुए, धन, सामर्थ्य और प्रसिद्धि होने के बाद भी वह सन्तुष्ट क्यों नहीं था? जब मात्र एक व्यक्ति ने उसके सम्मुख झुकने से मना कर दिया तो इससे वह परेशान क्यों हो गया? मोर्दकै के द्वारा आदर नहीं देने के कारण वास्तविकता में हामान को आघात नहीं लगा तो वह इससे इतना क्रोधित क्यों हो गया? वह इसे अनदेखा क्यों नहीं कर सका? यहाँ तक कि अगर उसके घमण्ड ने इस एक यहूदी के द्वारा अनादर प्रकट किए जाने को अनदेखा करने की उसे स्वीकृति नहीं दी तो उसने मात्र मोर्दकै को ही दण्डित क्यों नहीं करवाया? उसने उस सम्पूर्ण जाति के लोगों तक अपने क्रोध को बढ़ने क्यों दिया? एक यहूदी के अपराध के कारण उसने सब यहूदियों को क्यों मार डालना चाहा? हामान का ज्ञानरहित घमण्ड मन को चौंका देता है।

प्रस्ताव।

अध्याय 4. अध्याय 4 के आरम्भ में हम यहूदियों की समस्या का समाधान पाते हैं। हामान ने यह सूचना प्रकाशित की कि एक निश्चित दिनांक को यहूदी घात किए जाएँगे और उनकी सम्पत्ति जब्त कर ली जाएगी। जब मोर्दकै ने आने वाली महा विपत्ति के बारे में जाना तो उसने एस्तेर की सहायता की खोज करते हुए उसे एक सन्देश भेजा। उसने एस्तेर से कहा कि वह यहूदियों की ओर से राजा के सम्मुख मध्यस्थता करे। पहली बार में एस्तेर ऐसा करने के लिए अनिच्छुक थी क्योंकि अगर कोई व्यक्ति राजा के द्वारा बुलाए बिना उसके पास पहुँचने का प्रयास करता था तो अगर राजा उस व्यक्ति को स्वीकार करने के लिए अपने राजदण्ड को बढ़ाने के द्वारा दया दिखाता था तो वह बच जाता था परन्तु अगर राजा ऐसा नहीं करता था तो वह व्यक्ति मार डाला जाता था। कुछ समय के लिए क्योंकि एस्तेर को राजा के सम्मुख बुलाया नहीं गया था इसलिए वह डर रही थी कि अगर वह राजा के द्वारा बुलाए बिना जाएगी तो मार डाली जाएगी।

मोर्दकै ने तब ये शब्द उसके पास कहला भेजे:

> ... तू मन ही मन यह विचार न कर कि मैं ही राजभवन में रहने के कारण और सब यहूदियों में से बची रहूँगी। क्योंकि जो तू इस समय चुपचाप रहे, तो और किसी न किसी उपाय से यहूदियों का छुटकारा और उद्धार हो जाएगा, परन्तु तू अपने पिता के घराने समेत नष्ट होगी। क्या जाने तुझे ऐसे ही कठिन समय के लिये राजपद मिल गया हो? (4:13, 14)।

एस्तेर राज़ी हो गई और उसने यह कहते हुए प्रत्युत्तर दिया,

> तू जाकर शूशन के सब यहूदियों को इकट्ठा कर, और तुम सब मिलकर मेरे निमित्त उपवास करो, तीन दिन रात न तो कुछ खाओ, और न कुछ पीओ। मैं भी अपनी सहेलियों सहित उसी रीति उपवास करूँगी; और ऐसी ही दशा में मैं नियम के विरुद्ध राजा के पास भीतर जाऊँगी; और यदि नष्ट हो गई तो हो गई (4:16)।

अध्याय 5. तब एस्तेर ने अपना सारा साहस एकत्रित किया और राजा के

राजसिंहासन कक्ष तक पहुँच गई। हम उस दुविधा के निर्माण की कल्पना कर सकते हैं जो उस समय हो रहा था जब उसने आन्तरिक कक्ष में प्रवेश किया और क्षयर्ष के लिए प्रतीक्षा करने लगी कि वह उसे देख ले और उसकी उपस्थिति के प्रति प्रत्युत्तर दे। रिकॉर्ड ऐसा बताता है, “जब राजा ने एस्तेर रानी को आँगन में खड़ी हुई देखा, तब उसने प्रसन्न होकर सोने का राजदण्ड जो उसके हाथ में था उसकी ओर बढ़ाया। तब एस्तेर ने निकट जाकर राजदण्ड की नोक छूई” (5:2)। एस्तेर को जीवनदान दे दिया गया; और जब राजा ने उससे पूछा कि उसे क्या चाहिए तो उसने मात्र उसे और हामान को उस भोज के लिए निमन्त्रण दिया जो उसने तैयार किया था। राजा ने निमन्त्रण स्वीकार किया और उसने और हामान ने एस्तेर के भोज में भाग लिया। उस रात्रि भोज में क्षयर्ष ने उससे फिर पूछा कि वह उसके लिए क्या कर सकता है। एस्तेर ने मात्र यह चाहा कि राजा और हामान दूसरे दिन भी इसी प्रकार के एक भोज के लिए आएँ।

उस रात्रि भोज के बाद हामान और भी घमण्ड से भर गया। फिर भी उसे मोर्दकै के पास से होकर जाना था; और वह फिर से इस सच के द्वारा क्रोध से भर गया कि मोर्दकै उसकी महानता की पहचान करने से इनकार कर रहा है। वह घर गया और उसने अपनी पत्नी और मित्रों को बताया कि उसके पास सब कुछ है परन्तु मोर्दकै के कारण वह इन सब का आनन्द नहीं ले पा रहा है। उनकी सलाह पर उसने पचहत्तर फीट ऊँचा फाँसी का एक खम्भा बनाया जिस पर मोर्दकै को लटकाया जा सके। अपने घृणित शत्रु मोर्दकै के साथ ऐसा करने के लिए उसने राजा से स्वीकृति पाने की योजना बनाई।

अध्याय 6. उस रात राजा को सोने में बहुत समस्या हुई। समय निकालने के लिए और शायद नींद से भरने के लिए उसने चाहा कि दरबार के कुछ रिकॉर्ड उसके सम्मुख पढ़े जाएँ। एक प्रविष्टि से उसने जाना कि मोर्दकै ने उसकी जान बचाई; फिर जब उसने पूछा तब उसे सूचित किया गया कि इस कार्य के लिए मोर्दकै को कोई प्रतिफल प्राप्त नहीं हुआ है।

अगली सुबह हामान राजा से मिलने पहुँचा जिससे मोर्दकै को फाँसी पर लटकाने के लिए उसकी स्वीकृति प्राप्त कर सके। जब वह पहुँचा तब राजा ने उससे पूछा, “जिस मनुष्य की प्रतिष्ठा राजा करना चाहता हो तो उसके लिये क्या करना उचित होगा?” (6:6)। हामान ने सोचा कि राजा उसी के बारे में बात कर रहा है। उसने सोचा, “निश्चित रूप से, राजा मुझे इतना सम्मान देता है इसलिए मुझसे बढ़कर किसी और को सम्मान देने के लिए वह किसी और का चुनाव नहीं करेगा!” उसने उत्तर दिया कि जिस मनुष्य की प्रतिष्ठा राजा करना चाहता हो उसे उस घोड़े पर सवार किया जाए जिस पर राजा सवार होता है और उसे राजकीय वस्त्र पहनाए जाएँ। तब वह घोड़ा राजा के किसी बड़े हाकिम को सौंपा जाए जो नगर के चौक में उसे फिराए और उसके आगे आगे यह प्रचार करे, “जिसकी प्रतिष्ठा राजा करना चाहता है, उसके साथ ऐसा ही किया जाएगा” (6:9)।

हामान के उत्तर से राजा प्रसन्न हुआ और उसने तुरन्त प्रभाव में कहा, "जाओ और यह सब मोर्दकै के लिए करो!” हम मात्र हामान के विचारों की कल्पना कर

सकते हैं जब वह मोर्दकै की - अर्थात वह व्यक्ति जिससे वह संसार में किसी अन्य से बढ़कर घृणा करता था - अगुवाई पूरे नगर से होकर कर रहा था और उसकी प्रशंसा का प्रचार कर रहा था! इस अनुभव के बाद हामान ने शर्म के मारे अपने घर जाने में फुर्ती की; परन्तु वहाँ उसे कोई तसल्ली नहीं मिली क्योंकि उसकी पत्नी और मित्रों ने कहा, "मोर्दकै जिसे तू नीचा दिखाना चाहता है, यदि वह यहूदियों के वंश में का है, तो तू उस पर प्रबल न होने पाएगा उससे पूरी रीति से नीचा ही खाएगा" (6:13)। अपनी खोई हुई प्रतिष्ठा पर शोक करने के लिए उसके पास समय नहीं था क्योंकि एस्तेर के निवास स्थान में होने वाले रात्रि भोज में ले जाने के लिए कुछ दूत आ गए।

अध्याय 7. यह भोज कहानी का चरम बिन्दु उपलब्ध करवाता है। भोज के बाद सन्तुष्ट राजा ने एस्तेर से फिर पूछा कि वह उससे क्या चाहती है। उसने मात्र अपने और अपने लोगों के लिए जीवनदान माँगा। उसने राजा से कहा कि यहूदी अर्थात उसके लोग घात किए जाने पर हैं। यह सुन कर राजा क्रोध से भर गया और उसने पूछा कि इस उपद्रव के लिए ज़िम्मेदार व्यक्ति कौन है। एस्तेर ने उत्तर दिया कि इसका ज़िम्मेदार हामान है। राजा इतना व्याकुल हो गया कि वह स्वयं को सँभाल नहीं पाया। उसने कक्ष छोड़ दिया और राजभवन की बारी में निकल गया, सम्भवतः इसलिए कि अपने को शान्त कर सके। जब राजा बाहर था तब उसके क्रोध से डरकर हामान एस्तेर से दया की भीख माँगने लगा। इसी प्रक्रिया में वह एस्तेर के पैरों पर गिर पड़ा। उसी बिन्दु पर राजा लौट आया। क्षयर्ष ने गलती से यह समझा कि हामान उसकी रानी से बरबस करना चाहता है इसलिए उसने आज्ञा दी कि उसे तुरन्त फाँसी पर लटका दिया जाए। हामान को उसी फाँसी के खम्भे पर लटका दिया गया जो उसने मोर्दकै के लिए तैयार किया था!

अध्याय 8-10. पूर्व में जो कुछ हामान का था जिसमें प्रधान मंत्री के रुप में उसका पद भी शामिल है वह मोर्दकै को दे दिया गया। अब जबकि क्षयर्ष, एस्तेर और मोर्दकै के पक्ष में है तब भी एक समस्या बनी हुई है। मादै और फ़ारस के नियमों के अनुसार एक राजा के द्वारा पारित आज्ञा को पलटा नहीं जा सकता था। राजा ने पूर्व में ही कह दिया था कि एक निश्चित दिनांक को साम्राज्य के अन्य लोगों को स्वीकृति होगी कि वे यहूदियों का घात करें और उनकी सम्पत्ति जब्त कर लें। इस स्थिति का उपाय करने के लिए क्या किया जा सकता था?

मोर्दकै और एस्तेर ने इस समस्या का एक उपाय सोचा। एस्तेर फिर से राजा के सम्मुख गई और राजा के द्वारा उसका स्वागत किया गया। जो उपाय उसने और मोर्दकै ने सुझाया वह राजा ने स्वीकार कर लिया और वह यह था कि सम्पूर्ण साम्राज्य में सब यहूदियों को यह स्वीकृति होगी कि वे अपने शत्रुओं के विरुद्ध स्वयं का बचाव करें। जब चिट्ठी (*पुर*) डालने के द्वारा नियत दिन आया तब यहूदियों ने स्वयं का बचाव किया और अपने हज़ारों शत्रुओं को मार गिराया!

यह पुस्तक यह कहते हुए समाप्त होती है कि यहूदियों ने उस समय से पूरीम पर्व मनाने के द्वारा अपने शत्रुओं पर अपनी विजय का उत्सव मनाया। मोर्दकै महान बन गया और वह सदैव "अपने लोगों की भलाई की खोज में रहा करता था और

... अपने सब लोगों से शान्ति की बातें कहा करता था" (10:3)।

भाग 2. पुस्तक में परमेश्वर। एस्तेर की पुस्तक में सुनाई गई कहानी यही है परन्तु अब भी हमने उस प्रश्न का उत्तर नहीं दिया कि "इस पुस्तक में परमेश्वर कहाँ पर है?" कहानी में कहीं पर भी परमेश्वर का खुला वर्णन नहीं किया गया। फिर भी, हम विश्वास करते हैं कि वह इन घटनाओं में शामिल था। कैसे?

एस्तेर में परमेश्वर क्या *नहीं* कर रहा *था।* सम्भावित रुप से हमें यह कहते हुए आरम्भ करना चाहिए कि एक अर्थ में, एस्तेर में परमेश्वर कैसे *नहीं* पाया जाना चाहिए (अथवा ऐसा होना आवश्यक नहीं है)।

1. वह लोगों को पाप करने के लिए प्रेरित नहीं कर रहा था। परमेश्वर सब स्थानों में है, वह सब कुछ जानता है और वह सर्वशक्तिमान है। इस्राएली (उनके उत्तम स्तर तक) उन गुणों को समझ चुके थे। हम भी उन्हें स्मरण रखें और महसूस करें कि परमेश्वर अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए किसी भी प्रकार की परिस्थिति का प्रयोग कर सकता है। वास्तव में, इस कहानी में परमेश्वर किसी को भी पाप करने के लिए प्रेरित नहीं कर रहा था। राजा और उसके हाकिम उनके मतवाले आचरण के लिए स्वयं ज़िम्मेदार थे और हामान अपने पाप और मूर्खता के लिए स्वयं ज़िम्मेदार था।

2. वह नैतिक उदाहरण उपलब्ध नहीं करवा रहा था। परमेश्वर ने एस्तेर की पुस्तक लिखने की प्रेरणा इसलिए नहीं दी कि बाद की पीढ़ियों को अच्छे शिक्षाप्रद अथवा नैतिक चाल चलन के उदाहरण उपलब्ध करवा सके। यह पुस्तक परमेश्वर के लोगों के बारे में है परन्तु परमेश्वर के उत्तम लोगों में से कुछ, उसकी व्यवस्था में पाए जाने वाले मानक स्तरों से गिर गए। जब परमेश्वर ने इस्राएल के इतिहास की कहानी लिखने की प्रेरणा दी तब वह प्राथमिक रूप से बता रहा था कि किस प्रकार वह अपने चुने हुए लोगों के द्वारा (और कभी कभी उनके अलावा भी) छुटकारे की अपनी योजना पर काम कर रहा था। किसी कार्य को उसके द्वारा होने देने का रिकॉर्ड रखने का अर्थ यह नहीं है कि उसने उसे प्रमाणित कर दिया है। ऐतिहासिक पुस्तकों के "वीरों" के कार्यों के बारे में, इस कारण, यह अनुमान नहीं लगाया जाए कि वे परमेश्वर के द्वारा स्वीकृति प्राप्त हैं।

एस्तेर में परमेश्वर क्या कर रहा *था?* फिर भी, एस्तेर की कहानी में परमेश्वर सक्रिय था। कैसे?

मोर्दकै और एस्तेर ने ऊपरी तौर पर यह माना कि यहूदियों और फ़ारसी राज्य के मामलों में परमेश्वर शामिल था। मोर्दकै ने अपना विश्वास प्रकट किया कि अगर एस्तेर, यहूदियों के लिए नहीं बोलेगी तो कोई और उन्हें छुड़ा लेगा। उसके पास इस प्रकार का विश्वास क्यों था? इसका एकमात्र उचित उत्तर यह है कि वह ऐसा विश्वास करता था कि यहूदी परमेश्वर के लोग हैं और परमेश्वर यह स्वीकृति नहीं देगा कि वे घात किए जाएँ। वह अपने विश्वास में एकदम सही था! मोर्दकै ने - लोगों के मामलों में अपने कामों में - परमेश्वर के प्रबन्धन में भी अपना विश्वास प्रकट किया जब उसने एस्तेर से कहा, "क्या जाने तुझे ऐसे ही कठिन समय के लिये राजपद मिल गया हो?" (4:14)। वास्तव में उसके साथ ऐसा ही था! उसके रानी

बनने में परमेश्वर सम्मिलित था जिससे वह ऐसे पद में हो कि अपने लोगों को अर्थात यहूदियों को बचाने में सहायता दे सके। एस्तेर ने जब यहूदियों के पास कहला भेजा कि जब वह राजा के सम्मुख जाने की तैयारी करती है तब वे उसके साथ उपवास करें तब उसने प्रकट किया कि उसने समझ लिया है कि उसे परमेश्वर की सहायता की आवश्यकता है। उपवास का अर्थ है प्रार्थना करना। एस्तेर कह रही थी कि यहूदी उसके लिए प्रार्थना करें और मध्यस्थता करें जिससे वह राजा तक पहुँच बनाने में सफ़ल हो जाए। उसके प्रयास सफ़ल रहे। मोर्दकै और एस्तेर का मानना था कि परमेश्वर उनके द्वारा कार्य कर रहा था!

आगे, जब हम कहानी का अन्त पढ़ते हैं तब एक बार फिर यह देखने के लिए बाध्य किए जाते हैं कि पूर्व में क्या हुआ था। किस बात ने यहूदियों को उनके शत्रुओं से उद्धार पाने में अगुवाई दी? सांसारिक दृष्टिकोण से कहने के लिए हमारे पास यह होगा कि इस छुटकारे में असम्भव संयोगों की एक कड़ी शामिल थी:

वशती इसलिए थी कि वह रानी के पद से हटा दी जाए।
एस्तेर इसलिए थी कि वह वशती का स्थान लेने के लिए चुनी जाए।
मोर्दकै इसलिए था कि कुछ हत्यारों की बातचीत सुन सके और इस कारण वह राजा के प्राण बचा पाया।
राजा इसलिए था कि एस्तेर को अनुग्रह दे जब उसने बिना बुलाए उसके पास पहुँच बनाई।
राजा इसलिए था कि वह एक रात सो न सके, इसलिए उसने चाहा कि उसके दरबार के रिकॉर्ड उसके लिए पढ़े जाएँ और ऐसा हुआ कि उसे स्मरण दिलाया गया कि मोर्दकै ने उसका जीवन बचाया था।

यही बिन्दु प्रस्तुत करने का अन्य तरीका यह है कि इस प्रकार के प्रश्न पूछे जाएँ कि “अगर ... ?”:

अगर वशती क्षयर्ष के आदेशों को मानने से इनकार नहीं करती तो क्या होता?
अगर एस्तेर स्त्रियों के प्रमुख का अनुग्रह प्राप्त नहीं कर पाती तो क्या होता?
अगर एस्तेर, राजा को प्रसन्न नहीं कर पाती तो क्या होता?
अगर मोर्दकै, राजा को मार डालने के षड्यन्त्र के बारे में सुन नहीं पाता तो क्या होता?
अगर मोर्दकै, राजा को उस षड्यन्त्र के बारे में सूचित नहीं करता और उसका प्राण नहीं बचाता तो क्या होता?
अगर एस्तेर, राजा के सम्मुख जाने से इनकार कर देती तो क्या होता?
अगर राजा अपना राजदण्ड एस्तेर की ओर नहीं बढ़ाता तो क्या होता?
अगर उस एक रात राजा अच्छी प्रकार से सो जाता तो क्या होता?
अगर राजा उस रात स्मरणीय कार्यों की पुस्तक को अपने लिए पढ़ने के लिए नहीं कहता तो क्या होता?

इन सब प्रश्नों का उत्तर यह है कि कहानी का परिणाम एकदम अलग होता। वास्तव में यहूदी घात कर दिए जाते जैसा हामान चाहता था।

यहूदियों के लिए यह इतना महत्वपूर्ण क्यों था कि वे बचाए जाएँ? परमेश्वर ने वायदा किया था कि वह संसार को अब्राहम के वंश से बचाएगा। उस वायदे की पूर्ति इस्राएल जाति के द्वारा होनी थी। एस्तेर के समय तक इस्राएल "यहूदियों" के रूप में जाना जाता था। अगर यहूदी घात कर दिए जाते तो कोई इस्राएल नहीं बचता जिनके द्वारा मसीहा आ सके। अगर मसीहा अर्थात मसीह नहीं आता तो संसार के लिए कोई उद्धारकर्ता नहीं होता। अगर संसार के लिए कोई उद्धारकर्ता नहीं होता तो हमारे लिए कोई उद्धार नहीं होता!

यहूदी लोगों का बचाव और समृद्धि एस्तेर के इस निर्णय पर निर्भर थी कि वह राजा की उपस्थिति में बिना बुलाए जाए। फिर भी, उससे कहीं अधिक उसका निर्णय अत्यन्त महत्वपूर्ण था: उस क्षण, पूरे संसार का उद्धार संकट में पड़ सकता था!

तब हम एस्तेर में परमेश्वर को कहाँ पाते हैं? उसे हम दृश्यों के पीछे लोगों और परिस्थितियों के द्वारा - कभी कभी अनुपयुक्त लोगों और परिस्थितियों के द्वारा - प्रबन्धन के साथ कार्य करते हुए पाते हैं जिससे वह संसार में अपनी इच्छा पूरी कर सके। यह कोई "संयोग," "अचानक," "सौभाग्य" अथवा "अचानक आया अवसर" नहीं था जो एस्तेर को फ़ारस के सिंहासन पर सही समय पर ले आया जिससे वह अपने लोगों को विनाश से बचा सके; यह परमेश्वर का प्रबन्धन था! हो सकता है कि परमेश्वर का नाम एस्तेर की पुस्तक में देखने को नहीं मिले परन्तु वह प्रत्येक घटना में चुपचाप और छिपे हुए रूप में था और अपने लोगों को बचाने और अपने उद्देश्यों को पूरा करने के लिए दृश्यों के पीछे कार्य कर रहा था!

भाग 3. मसीही लोगों की कहानी। हमने एस्तेर की कहानी फिर से सुनाई है परन्तु उसकी कहानी हमारी कहानी से किस प्रकार सम्बन्ध रखती है? एक मसीही के रूप में हम इस पुस्तक में सिखाई गई सच्चाइयों को स्वयं के जीवन में किस प्रकार लागू कर सकते हैं?

निःसन्देह, हम इस बात के लिए धन्यवादी हो सकते हैं कि यहूदियों के बचाए जाने में मोर्दकै और एस्तेर ने परमेश्वर का सहयोग किया जिससे यीशु मसीह यहूदियों के द्वारा आ सके और हमें और वर्तमान के सब लोगों को उद्धार उपलब्ध करवा सके।

फिर, हम प्रबन्धन के बारे में कुछ और सीख सकते हैं। वही परमेश्वर जिसने निराशात्मक परिस्थितियों में अपने लोगों को प्रबन्धन के साथ बचाया वह वर्तमान में अब भी प्रबन्धन के साथ कार्य कर रहा है। पौलुस इसे इस प्रकार रखता है: "हम जानते हैं कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उनके लिये सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती हैं; अर्थात् उन्हीं के लिये जो उसकी इच्छा के अनुसार बुलाए हुए हैं" (रोमियों 8:28)। हम इसमें निश्चय प्राप्त कर सकते हैं कि जब तक हम उन लोगों में से हैं "जो उसकी इच्छा के अनुसार बुलाए हुए हैं," तब तक परमेश्वर अपने भले उद्देश्यों को पूरा करने के लिए हमारी परिस्थितियों में और

हमारी परिस्थितियों के द्वारा किसी न किसी प्रकार से कार्य कर रहा है। यह जानकर आराम मिलता है!

कभी कभी हम स्वयं को कठिन परिस्थितियों में पाते हैं, सम्भावित रूप से यहूदियों की परिस्थिति के समान जिसका सामना उन्होंने एस्तेर के समय में किया। हो सकता है कि हम महसूस करें कि हम घर से बहुत दूर हैं, ऐसे परदेशियों से घिरे हुए हैं जो हमारे जीने या मरने की परवाह नहीं करते। कभी कभी हो सकता है कि हम शत्रुओं के द्वारा डरा दिए जाएँ। सब शत्रु लोग नहीं हैं जो हमें जान से मारने की धमकी दे रहे हैं; परन्तु बीमारी, दबाव, दरिद्रता और अकेलापन भी धमकाने वाले शत्रु हो सकते हैं। हो सकता है कि बुजुर्ग लोग परिवार या मित्रों से प्रेम न पाते हों, उनकी देखभाल और सराहना नहीं की जाती हो या उन्हें छोड़ दिया गया हो। कुछ परिस्थितियों में, जो लोग पीड़ा से होकर जा रहे हैं वे ऐसा देखेंगे कि प्रकट रूप में कोई राहत प्राप्त नहीं हो रही है और न ही सहायता का कोई स्रोत उपलब्ध है।

हमारे परखे जाने के अधिकतर समय में हो सकता है कि हमें परमेश्वर की खोज करने में कठिनाई हो। हो सकता है कि हम सोचें कि वह कहीं दूर चला गया है - वह अनुपस्थित है और चुपचाप है। हम प्रार्थना करते हैं परन्तु ऐसा लगता है कि वह उत्तर नहीं दे रहा है। हम उसकी सहायता की खोज करते हैं परन्तु ऐसा लगता है कि वह हमारी आवश्यकताओं से अनभिज्ञ है। हम पुकारते हैं, “हे परमेश्वर, आप कहाँ पर हैं जबकि मुझे आपकी आवश्यकता है?”

इस प्रकार की परिस्थितियों में एस्तेर हमारी आवश्यकताओं से बात करती है। पुस्तक व्याख्या करती है कि जब जीवन अंधकारमय लगता है तब भी परमेश्वर हमें आनन्द और मग्न करने के लिए कार्यशील है। यह बताती है कि जब लगे कि परमेश्वर अनभिज्ञ है तब भी वह सदैव हमारी चिन्ता करता है। अपनी भली इच्छा पूरी करने के लिए हमारी परिस्थितियों के द्वारा कार्य करते हुए वह निरन्तर हमें आशीष देगा। यह पुस्तक सिद्ध करती है कि परमेश्वर सदैव उपस्थित रहता है और हमें आशीष दे सकता है यहाँ तक कि अत्यन्त कठिन परिस्थितियों में और सम्भावित रूप से अत्यन्त अनपेक्षित लोगों के द्वारा भी वह ऐसा कर सकता है।

इस कारण हम सबके लिए एस्तेर का सन्देश यह है: अगर आप परमेश्वर की सन्तान हैं तो आप अपनी कहानी - और आपके जीवन - में परमेश्वर के प्रबन्धन के कार्य के प्रति सुनिश्चित हो सकते हैं फिर चाहे आपकी परिस्थितियाँ कितनी ही कठिन क्यों न हों।

उपसंहार। एस्तेर की पुस्तक हमें दो तरीकों से चुनौती देती है।

पहला, यह हमें चुनौती देती है कि हम सदैव वह करें जो सही हो। यह पुस्तक प्राथमिक रूप से यहूदियों को बचाने के लिए परमेश्वर ने प्रबन्धन के साथ जो किया उसके बारे में है। फिर भी, हमें स्मरण रखना चाहिए कि मोर्दकै और एस्तेर ने कहानी में महत्वपूर्ण भाग अदा किया। इसके सुखद अन्त में सहायता देने के लिए उन्होंने बुद्धिमानी और साहस के साथ काम किया। यह तथ्य हमें स्मरण कराए कि परमेश्वर मनुष्यों के मामलों में काम करता है; परन्तु कभी कभी अपने उद्देश्यों को

पूरा करने के लिए वह बुद्धिमान, साहसी और विश्वासयोग्य पुरुषों और स्त्रियों का प्रयोग करते हुए भी अपना काम करता है। हमें परमेश्वर पर निर्भर रहना चाहिए; परन्तु ठीक उसी समय में हमारे पास कुछ ज़िम्मेदारियाँ हैं जिन्हें हमें पूरा करना होगा। हमें उसके प्रति विश्वासयोग्य रहना होगा; उसकी इच्छा के अनुसार कार्य करने के लिए साहसी बने रहना होगा फिर चाहे अपने धर्मी आचरण के कारण हमें पीड़ा ही क्यों न उठानी पड़े; और बुद्धिमानी के साथ काम करने की खोज करनी होगी। परमेश्वर की सहायता से जो सबसे अच्छा है उसे हम पूरा कर सकते हैं।

दूसरा, यह पुस्तक हमें चुनौती देती है कि हम स्वयं से पूछें, "क्या मैं राज्य में इस प्रकार के एक समय के लिए आया हूँ?" अन्य शब्दों में, हमें इस सम्भावना के बारे में सोचना चाहिए कि परमेश्वर ने हमें अपने प्रबन्धन में किसी विशेष पद में रखा है अथवा एक अद्वितीय अवसर दिया है जिससे हम उसके राज्य के लिए कुछ लाभप्रद कर सकें। ऐसा हो सकता है कि हममें से कुछ को अनियोजित और अप्रत्याशित परिस्थितियाँ विदेशी मिशनरियों अथवा सामुदायिक अगुवों के पदों में रख दे। संगीतकार, राजनेता, चिकित्सक अथवा नर्स बनते हुए हम अन्य लोगों को आशीषित कर सकते हैं। हो सकता है कि हममें से कुछ लोग स्वयं को कलीसिया में प्राचीनों के रूप में सेवा करते हुए पाएँ ... या बच्चों के साथ काम करते हुए पाएँ ... अथवा मसीही साहित्य तैयार करते हुए पाएँ। हम स्वयं को जहाँ कहीं पर भी पाएँ, हम स्वयं से यह प्रश्न पूछें "क्या परमेश्वर ने मुझे यहाँ पर रखा है?" हमें चिन्तन करने की आवश्यकता है कि परमेश्वर ने हमारा जीवन किस प्रकार व्यवस्थित किया है जिससे उसके राज्य में भला करने के लिए, आत्माएँ बचाने के लिए, अन्य लोगों की सहायता करने के लिए और उसके नाम को महिमा देने के लिए हमारे पास अवसर हैं। जब हम यह सम्भावना देखते हैं कि परमेश्वर ने हमें किसी एक निश्चित पद में रखा है या कोई विशेष अवसर दिया है तब हम उसी समान प्रतिक्रिया करें जैसा एस्तेर ने किया जब उसने तुरन्त प्रभाव में कहा, "परमेश्वर ने जो अवसर मुझे दिया है उसकी मैं चुनौती स्वीकार करूँगी फिर चाहे जो भी हो। मैं परमेश्वर की इच्छा पूरी करूँगी; और यदि नष्ट हो गई तो हो गई।"

समाप्ति नोट्स

[1]माइकल वी. फ़ॉक्स, *कैरेक्टर एंड आइडियोलॉजी इन द बुक ऑफ़ एस्तेर*, 2न्ड एड. (ग्रान्ड रेपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 2001), 128. [2]अडेल बर्लिन, *एस्तेर*, द JPS बाइबल कमेन्ट्री (फ़िलाडेल्फ़िया: जूइश पब्लिकेशन सोसाइटी, 2001), 94. [3]TEV में 10:1 में "बेगार" दिया हुआ है। [4]कैरी ए. मूर, *एस्तेर*, द ऐंकर बाइबल, वोल. 7बी (न्यू योर्क: डबलडे एंड कम्पनी, 1971), 99. [5]एफ़. बी. ह्युई जुनियर, "एस्तेर," इन द *एक्सपोज़िटर्स बाइबल कमेन्ट्री*, वोल. 4, *1 राजा-अय्यूब*, एड. फ्रेंक ई. गेबलाइन (ग्रान्ड रेपिड्स, मिशिगन: जोनडर्वन पब्लिशिंग हाउस, 1988), 839. [6]जोइस जी. बाल्डविन, *एस्तेर*, द टिन्डेल ओल्ड टेस्टामेन्ट कमेन्ट्रीज़ (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोय: इन्टर-वर्सिटी प्रेस, 1984), 115. [7]"उसके वंशजों," के स्थान पर कुछ संस्करणों में "उनके वंशज" (NEB; REB; TEV; NLT) दिया हुआ है जो यहूदियों की सन्तान की ओर संकेत देता है। [8]बाल्डविन, 115.